Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप का प्रभाव : कटनी जिले का भौगोलिकअध्ययन

डॉ. मोहन निमोले* दशरथ प्रसाद**

* सहायक प्राध्यापक (भूगोल) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी (भूगोल) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शास. माधव महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने और छोटे किसानों की आजीविका में सुधार के लिए कृषि विविधीकरण एक प्रमुख रणनीति के रूप में उभरा है। कृषि योग्य भूमि सीमित है, ऐसी दशा में दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में विपुल उत्पादन हेतु कृषि भी आधुनिक उन्नत तकनीकी का प्रयोग का संयोजन देखने को मिलता है। वर्तमान में आधुनिक तकनीकी के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप के प्रभावों का अध्ययन।
शब्द कुंजी –मोनो-क्रॉपिंग, स्थानांतरित, प्रौद्योगिकी, नवाचार।

प्रस्तावना – विकासशील देशों में सतत् ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने और छोटे किसानों की आजीविका में सुधार के लिए कृषि विविधीकरण एक प्रमुख रणनीति के रूप में उभरा है। पारंपरिक मोनो-क्रॉपिंग प्रणालियों से अधिक विविध कृषि पद्धतियों में स्थानांतरित होकर, किसान अपनी आय और खाद्य सुरक्षा में वृद्धि करते हुए आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक झटकों के प्रति अपनी लचीलापन बढ़ा सकते हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर कृषि के विविध रूपों के प्रभाव का पता लगाना है, जिसमें उन भौगोलिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो विविधीकरण रणनीतियों को अपनाने और उनकी सफलता को प्रभावित करते हैं। वर्तमान समय में बढती हुई जनसंख्या का प्रभाव कृषि उत्पादन पर भी पड़ा है फलस्वरूप कृषि से जो उत्पादन होता है, वह सभी के लिए पर्याप्त नहीं होता है। कृषि योग्य भूमि सीमित है, ऐसी दशा में दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में विपुल उत्पादन हेतु कृषि भी आधुनिक उन्नत तकनीकी का प्रयोग का संयोजन देखने को मिलता है। वर्तमान में आधुनिक तकनीकी के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप के प्रभावों का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य : अध्ययन के उद्देश्य निम्नानुसार है:

1. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप का प्रभाव।
2. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के बदलते स्वरूप का आर्थिक विकास में योगदान।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के क्षेत्र में रोजगार के अवसर तैयार करना।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि की क्षेत्र प्रौद्योगिकी नवाचार तैयार करना ।

अध्ययन क्षेत्र: भारत के हृदय प्रदेश में उत्तर पूर्व में स्थित कटनी जिला, जबलपुर जिले की एक तहसील मुडवारा को 1998 में अलग कर कटनी जिले को बनाया गया। कटनी जिले का दूसरा नाम **'मार्बल नगरी'** के नाम से जाना जाता है। कटनी जिले की भौगोलिक स्थिति का विस्तार $23^{0}37'$ से $24^{0}28'$ उत्तरी अक्षांश तथा $79^{0}57'$ से $80^{0}58'$ पूर्वी देशांतर, कटनी जिले से कर्क रेखा हो कर गुजरती है, जिले का कुल क्षेत्रफल 4949.59 वर्ग किलोमीटर है। जबलपुर संभाग में स्थिति विंध्य पहाडियाँ से लगा हुआ है। समुद्र तल से 392 मीटर, जिले में 7 तहसीलें मुडवारा, विजयराघवगढ़, बहोरीबन्द, ढ़ीमरखेड़ा, रीठी, बडवारा और बरही हैं।

शोध विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन प्राथमिक संमकों पर आधारित है, अत: प्राथमिक संमकों का संकलन ग्रामीण कृषकों से अनुसूची, प्रत्यक्ष चर्चा एवं अवलोकन के माध्यम से किया गया है। इस हेतु निदर्शन पद्धति से कटनी जिले के 50-50 कृषकों का चयन कर समंकों का संकलन कर विश्लेषणात्मक पद्धति से उद्देश्यों को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है।

विश्लेषण : कटनी क्षेत्र में उत्पादित मुख्य फसलों की स्थिति-कटनी जिले में प्रमुख फसलों के रूप में इन फसलों को उगाया जाता है ग्रामीण जीवन में लोगों के पास कृषि कार्य करना एवं पशुपालन से अपना जीवनयापनकरतेहैं वर्ष 2019-20 में कृषि उत्पादन सुधार हुआ है इसका गेहूं 674837 उत्पादन (मेट्रिक टन) धान 789575 उत्पादन (मेट्रिक टन) का उत्पादन प्राप्त हुआ है।

तालिका क्रमांक 1: कटनी जिला (अंतिम अनुमान) हेतु क्षेत्राच्छादन, उत्पादन एवं उत्पादकता ख वर्ष 2019-20

क्र.	फसलें	क्षेत्राच्छादन (हेक्टर)	उत्पादन (मेट्रिक टन)	उत्पादकता (कि. ग्रा./हेक्टर में)
1	धान	175034	789575	4511
2	ज्वार	36	51	1417
3	बाजरा	2	1	500
4	तिल	6943	3930	566
5	कपास	16	17	1056
6	गेहू	194702	674837	3272
7	जौ	99	251	2059
8	चना	17877	39615	1685
9	मसूर	2382	2127	893
10	मटर	158	199	1259
11	गन्ना	91	315	3462

स्त्रोत : म.प्र. कृषि सांख्यिकी

कटनी जिले में कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित नवाचार किए जा रहे हैं,

सिंचाई सुविधाएं : जिले में लगभग 36 प्रतिशत क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है, जो फसल उत्पादन को बढ़ाने में सहायक है।

कृषि विपणन सुधार : मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड ने कृषकों को उनकी उपज का बेहतर मूल्य दिलाने के लिए समय-समय पर कृषि विपणन प्रणाली में सुधार किए हैं। कृषि विपणन बोर्ड और कृषि उपज मंडी समितियों द्वारा किसानों के जीवन में खुशहाली लाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट : मध्यप्रदेश राज्य कृषि विपणन बोर्ड ने पोस्ट हार्वेस्ट मैनेजमेंट सिस्टम के नवाचारों को नेतृत्व प्रदान किया है। इन कदमों के साथ, कृषि विपणन बोर्ड किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने और कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

ग्रामीण में कृषि जलवायु अनुकूल वर्षा आधारित कृषि रणनीति: ग्रामीण में कृषि जलवायु अनुकूल वर्षा आधारित कृषि रणनीति में विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए आवश्यक हैं।

प्रमुख रणनीतियाँ :

फसल विविधता : फसल विविधता न केवल खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता में सुधार और कीटों को नियंत्रित करने में भी मदद करती है।

संरक्षण कृषि : यह मिट्टी की संरचना को बेहतर बनाता है और जल संरक्षण में सहायक होता है, जिससे जलवायु के चरम प्रभावों के प्रति सहनशीलता बढ़ती है।

जल संसाधन प्रबंधन : सिंचाई अवसंरचना को उन्नत करना और ड्रिप सिंचाई जैसी तकनीकों का उपयोग करना आवश्यक है, खासकर सूखा प्रभावित क्षेत्रों में।

एकीकृत कृषि पारिस्थितिकी तंत्र : यह दृष्टिकोण कृषि उत्पादकता और आय को बढ़ाने के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलता को भी बढ़ाता है।

नीतिगत समर्थन : प्रभावी नीतियों और शासन व्यवस्था का होना आवश्यक है, जिसमें जलवायु स्मार्ट पद्धतियों को प्रोत्साहित करने के लिए सब्सिडी और इन्सेंटिव शामिल हैं.इन रणनीतियों के माध्यम से, वर्षा आधारित कृषि को जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अधिक लचीला और टिकाऊ बनायाजासकताहै।[3]

कृषि कार्य खेतिहर मजदूर : ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि ही एक आय का स्रोत है जिसमें अपने मावन को अपनी ही पीढ़ी दर पीढ़ी कृषि कार्य कर रहे हैं, अपने परिवार का अर्थव्यवस्था विकास हेतु कृषि एवं पशुपालन का उपयोग करते है जलवायु परिवर्तन का प्रभाव कृषि क्षेत्र में देखने को मिला है इन करण से पता लगाया जा सकता है की जलवायु का प्रभाव कृषि क्षेत्रो में प्रभाव डलती है. वर्षा की अनियमित, प्रदूषण, तापमान में वृद्धि औसत दर, आदि करण से जलवायु प्रभाव को देखा जाता है, ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए खेतिहर मजदूर अर्थव्यवस्था स्तर सुधार के कृषि का ही अधिकांस सहयोग लेते है

तालिका क्रमांक 2

कटनी जिला: की तहसील वार खेतिहर मजदूर (2011)

क्र.	तहसील	पुरूष	महिला	योग
1	रीठी	6197	3391	9588
2	मुडवारा	3590	1812	5402
3	बडवारा	99887	5243	15230
4	विजयराघवगढ	8012	4197	12209
5	बहोरीबन्द	11049	6271	17320
6	ढिमरखेडा	14289	8414	22703
	कटनी खेतिहर मजदूर	**54168**	**29745**	**83913**
	जनसंख्या कटनी	631207	660835	1292042

स्त्रोत: कटनी जिले की जनगणना 2011

कृषि विविधीकरण को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारक: कृषि विविधीकरण रणनीतियों की सफलता भौगोलिक संदर्भ से काफी प्रभावित होती है, जिसमें जलवायु, मिट्टी, स्थलाकृति और बुनियादी ढांचे जैसे कारक शामिल हैं। स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप प्रभावी विविधीकरण कार्यक्रमों को डिजाइन और कार्यान्वित करने के लिए इन भौगोलिक कारकों को समझना महत्वपूर्ण है।

कृषि विविधीकरण का महत्व : कृषि विविधीकरण में कृषि प्रणाली में नई फसलों, पशुधन, या गैर-कृषि गतिविधियों की शुरूआत शामिल है। इसमें शामिल हो सकते हैं: विभिन्न प्रकार की फसलों की खेती करना पशुधन उत्पादन को एकीकृत करना प्रसंस्करण, विपणन, या पर्यटन जैसी गैर-कृषि आय-सृजन गतिविधियों में संलग्न होना कृषि विविधीकरण के लाभ असंख्य और अच्छी तरह से प्रलेखित हैं। बेहतर खाद्य सुरक्षा और पोषण प्रतिषत एक विविध कृषि प्रणाली खाद्य पदार्थों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करती है, जिससे अधिक संतुलित आहार और आवश्यक पोषक तत्वों तक बेहतर पहुंच सुनिश्चित होती है। बढ़ी हुई आय स्थिरता प्रतिशत एक ही फसल या गतिविधि पर निर्भरता को कम करके, विविधीकरण मूल्य में उतार-चढ़ाव, फसल की विफलता या बाजार के झटके से जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद करता है। जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन में वृद्धि प्रतिशत विविध कृषि प्रणालियाँ चरम मौसम की घटनाओं, कीटों और बीमारियों के प्रभावों को बेहतर ढंग से झेलने में सक्षम हैं, जिनके जलवायु परिवर्तन के कारण तीव्र होने की आशंका है। प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग: कृषि वानिकी और एकीकृत कीट प्रबंधन जैसी विविध कृषि पद्धतियाँ, मिट्टी की उर्वरता, जल संसाधनों और जैव विविधता के संरक्षण में मदद कर सकती हैं। बढ़ी हुई लैंगिक समानता प्रतिशत महिलाएं अक्सर विविध कृषि प्रणालियों के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, खासकर सब्जियों, फलों और छोटे पशुधन के उत्पादन में। विविधीकरण महिलाओं को सशक्त बना सकता है और संसाधनों और निर्णय लेने की शक्ति तक उनकी पहुंच में सुधार कर सकता है।

निष्कर्ष: प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त के विश्लेषण के पश्चात् प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि यद्यपि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का स्वरूप परम्परागत से आधुनिक होता जा रहा है। ग्रामीण कृषक तेजी से आधुनिक उपकरणों का प्रयोग कर नवीन तकनीकी के प्रयोग की ओर अग्रसर हो रहे हैं किन्तु दूसरी ओर कृषकों की अशिक्षा एवं प्रशिक्षण के अभाव के कारण आधुनिक तकनीक के प्रयोग में कठिनाई आती है। अत: इस ओर ध्यान देना आवश्यक है ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि का बदलता स्वरूप देश में नई कांति लाने में सक्षम होगा। कृषि विविधीकरण में छोटे किसानों की आजीविका में सुधार

लाने और सतत ग्रामीण विकास को बढ़ावा देने की महत्वपूर्ण क्षमता है। पारंपरिक मोनो-क्रॉपिंग प्रणालियों से अधिक विविध कृषि पद्धतियों में स्थानांतरित होकर, किसान अपनी आय और खाद्य सुरक्षा में वृद्धि करते हुए आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक झटकों के प्रति अपनी लचीलापन बढ़ा सकते हैं। हालाँकि, विविधीकरण रणनीतियों की सफलता जलवायु, मिट्टी की उर्वरता, स्थलाकृति और बुनियादी ढांचे जैसे भौगोलिक कारकों से काफी प्रभावित होती है। विविध कृषि पद्धतियों को अपनाने का समर्थन करने के लिए, नीति निर्माताओं को बुनियादी ढांचे के विकास, सुरक्षित भूमि स्वामित्व और जल अधिकारों में निवेश करना चाहिए, ऋण और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच में सुधार करना चाहिए, विस्तार सेवाओं को मजबूत करना चाहिए और पारंपरिक और वैज्ञानिक ज्ञान के एकीकरण को बढ़ावा देना चाहिए। कृषि विविधीकरण की चुनौतियों और बाधाओं को संबोधित करके, सरकारें और विकास संगठन अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत ग्रामीण अर्थव्यवस्था बनाने में मदद कर सकते हैं जो सभी के लिए अवसर प्रदान करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राज्य कृषि विपणन बोर्ड,मध्यप्रदेश
2. कटनी जिले जनगणना पुस्तक 2011
3. 20 फरवरी, 2024 PRS Legislative Research, Institute for Policy Research Studies 3rd Floor, Gandharva Mahavidyalaya ,212, Deen Dayal Upadhyaya Marg, New Delhi – 110002 Tel: (011) 23234801, 43434035, www. prsindia.org

****